ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(1): 54-56
www.allresearchjournal.com
Received: 27-11-2019
Accepted: 30-12-2019

डॉ0 मीनाक्षी कुमारी
+2 शिक्षिका (इतिहास)
शिवगंगा बालिका +2 उ0वि0,
मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 मीनाक्षी कुमारी
+2 शिक्षिका (इतिहास)
शिवगंगा बालिका +2 उ0वि0,
मधुबनी, बिहार, भारत

औपनिवेशिक भारत में क्रांतिकारी आन्दोलनों में हिन्दी समाचार पत्रों की भूमिकाः विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 मीनाक्षी कुमारी

सारांश
औपनिवेशिक भारत में क्रांतिकारी आन्दोलनों में हिन्दी समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दी समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन के शोषणकारी अनुदार आचरण एवं भारतीय जनमानस की असहनीय पीड़ा को अपने अग्रलेखों एवं सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से अभिव्यक्ति के स्वर देकर क्रांतिकारी आंदोलन को सम्बल प्रदान किया। हिन्दी समाचार पत्रों ने जहॉ स्वयं के लिए उच्चतम मूल्यों की स्थापना की, वहीं आजादी के संघर्ष की चिंगारी को ज्वालामुखी के रूप में विस्फोटक स्वरूप देते हुए समूचे राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान किया। हिन्दी समाचार पत्रों एवं उनके संपादकों का स्वर राष्ट्रीय एवं स्वरूप सार्वदेशिक था। राष्ट्रीय समाचार पत्र अपनी मान–मर्यादा की चिन्ता किए बगैर अपने मिशन से कभी विचलित नहीं हुए। वास्तव में राष्ट्रवादी प्रेस ने ही समय–समय पर आन्दोलनों में शिथिलता के कारण जो शून्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, उसको सशक्त दिशा देकर एक नई ऊर्जा और चेतना प्रदान की।

मुख्य शब्दः साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, स्वदेशी, मानवतावादी, श्रमजीवी, क्रांतिकारी, पत्रकारिता, उरःस्थल

प्रस्तावना
इतिहास में झांके तो हम अक्सर सुनते–पढ़ते हैं कि ''अखबारों ने भारत की आजादी में एक अहम भूमिका निभाई थी'' मगर सच्चाई को परखे तो हमें मालूम होगा कि अंग्रेजी हुकुमत के समय देश में एकता, सद्भावना, समाजसेवा और देशभक्ति जैसे बीजों को अंकुरित करने वाले इन स्वतंत्रता सेनानी अखबारों का आज ना ही कोई वजूद है ना ही इनको पुनजीर्वित करने को कभी सोचा गया। अफसोस की बात तो यह भी है कि आजादी के इतने सालों में इस गंभीर मुद्दे पर किसी का भी ध्यान नहीं गया था शायद इसे जरूरी नहीं समझा गया। मगर आज हम इस मुद्दे को इस शोध पत्र के माध्यम से टटोल कर आपके सामने रखेंगे।

उद्देश्य एवं महत्वः– इस शोध पत्र में मेरा मुख्य उद्देश्य समाचार पत्रों के गौरवमयी परंपरा से आम जनता को अवगत कराना साथ ही विदेशी सत्ता से त्रस्त जनता को सन्मार्ग दिखाने एवं दायित्वपूर्ण पत्रकारिता के महत्व को प्रतिष्ठापित करना है।

भूमिकाः– समाचार पत्र केवल समाचार उपलब्ध करवाने वाले दस्तावेज ही नहीं होते, बल्कि ये सामाजिक संपर्क स्थापित करके समाज के प्रत्येक वर्ग को एक सामूहिक भागीदारी भी सिखाते हैं। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी समाचार–पत्रों की यही भूमिका रही। इसका उद्देश्य महज एक दैनिक पत्र बनना नहीं बल्कि ब्रिटिश हुकूमत से भारतमाता की मुक्ति के लिए देश के जनमानस को जाग्रत करना तथा इस संग्राम के लिए प्रेरित करना था। समाचार–पत्रों में पत्रकारों ने अपनी कलम के बल पर ऐसा माहौल तैयार किया कि सारा देश एक होकर अंग्रेजी सरकार के शोषण अन्याय और दमनकारी नीतियों का विरोध करने के लिए एक साथ खड़ा हो गया। अकबर इलाहाबादी की पंक्तियॉ :– ''खीचें न कमानों को, न तलवार निकालों जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।'' ने सारे देश में एक ऐसी लहर पैदा कि की हर कोने से समचार पत्र व पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हो गया किसी संकट की परवाह किए बिना देश प्रेमियों ने हिन्दी समाचार पत्रों का प्रकाशन एक मिशन के रूप में शुरू किया। हिन्दी समाचार–पत्रों ने आजादी की अग्निशिखा को अनवरत प्रज्जवलित रखने में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया।

विश्लेषण एवं व्याख्याः– औपनिवेशिक भारत में हिन्दी समाचार पत्रों का क्रांतिकारी आंदोलनों और उनके संगठन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस संबंध में जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी ने समाचार पत्रों की तेजस्विता का अभिनंदन करते हुए लिखा है कि– जहॉ तक क्रांतिकारी आंदोलन का संबंध है, भारत का क्रांतिकारी आंदोलन बंदूक और बम से नहीं समाचार पत्रों से शुरू हुआ। सन् 1757 के प्लासी के युद्ध से 100 वर्षो तक ब्रिटिश साम्राज्यवादी निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होता रहा। सन् 1857 की प्रथम सशस्त्र क्रांति के संबंध में इन्द्रविधा वाचस्पति ने ज्वालामुखी कैसे फटा शीर्षक के अंतर्गत बहुत ही मार्मिक ढ़ंग से लिखते हुए कहा है कि अब तक हमने भारत के उरःस्थल पर ब्रिटिश राज्य रूपी रथ के निरंतर आगे ही आगे बढ़ने की कहानी सुनाई, अब हम उस विशाल प्रतिक्रिया की कहानी आरंभ करते हैं, जिसका अंत सन् 1947 के अगस्त मास में हुआ। प्रगति का युग 100 वर्षो तक जारी रहा तो प्रतिक्रिया के युग का विस्तार भी लगभग 100 वर्षो 90 वर्ष 4 माह का रहा।[1]

19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में देश में कई बार अकाल पड़ चुका था। सन् 1868–78 तक मद्रास और बंबई प्रांत अकाल की मार से टूट गया था। भारतीयों का असंतोष पराकाष्ठा तक पहुॅच गया था। 1873 में पावना जिले के किसानों ने अपने को विद्रोही घोषित किया और यूरोपीय शोषण का प्रतिकार करने के लिए समितियों का संगठन भी किया गया। सन् 1877 में लार्ड लिटन ने दिल्ली में एक दरबार आयोजित किया था। इसमें देश के राजाओं, महाराजाओं एवं नवाबों ने भाग लिया। इस दरबार में महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी की उपाधि से विभूषित किया गया। इस आयोजन पर बहुत धन व्यय किया गया। देश में इसी वर्ष दक्षिण भारत में भयंकर अकाल पड़ा था। लिटन ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। जनता की अकाल से रक्षा का कोई प्रयत्न नहीं किया गया। हिन्दी समाचार पत्रों ने इस कार्य की तीव्र आलोचना की। सार्वजनिक धन के इस अपव्यय एवं जनता के रक्षा प्रयासों की उपेक्षा कर व्यंग्य करते हुए कलकता के पत्रकार ने कहा था, जब रोम जल रहा था, नीरो बांसुरी बजा रहा था।[2]

20वीं शताब्दी के आरंभ में सारे भारत में क्रांतिकारी लहर दौड़ी थी। देश में आर्थिक और राजनीतिक संकट, जोरो पर था। 19वीं शताब्दी के अंत में अकाल और प्लेग से बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु हुई जिससे लोगों के मन में निराशा और दुःख के बादल छा गए। मगर यूरोप और एशिया में कुछ ऐसी घटनाऍ घटी जिनसे यहॉ भी आशा की किरण फूटी, जैसे कि ओटोमन साम्राज्य से बाल्कन राज्य की आजादी। सन्1897 में एबिसीनिया जैसे छोटे देश से इटली की सेना की हार तथा सन् 1905 में जापान के हाथों रूस की हार। इन घटनाओं से भारत के लोगों का पश्चिम की श्रेष्ठता पर से विश्वास उठ गया। बेकारी और अंग्रेजों की प्रजातीय भेदभाव की नीति से भारत के भेदभाव की नीति से भारत के शिक्षित नौजवानों में असंतोष बढ़ा जिसने ब्रिटिश राज्य के विरूद्ध उग्रवादी आन्दोलनों को इस संघर्ष से बढ़ावा मिला। 20वीं शताब्ददी के प्रथम दशक में वीरेन्द्र कुमार घोष और भूपेन्द्र नाथ दत्त के नेतृत्व में बंगाल में गुप्त क्रांतिकारी समितियॉ बनी। इनके सदस्यों पर बंकिमचन्द्र के प्रसिद्ध उपन्यास आनन्द मठ का तथा रूसी क्रांति का खुला प्रभाव था। ये स्वामी विवेकानंद, शिवाजी तथा गुरू गोविन्द सिंह से प्रेरणा प्राप्त करते थे। ये क्रांतिकारी भारत मॉ को रिपुदलवारिणी काली और काली को भारत मॉ कहते थे।

जहॉ तक क्रांतिकारी आन्दोलन का संबंध है, भारत की क्रांतिकारी आन्दोलन बन्दूक और बम के साथ नहीं, समाचार पत्रों से प्रारंभ हुआ क्योंकि क्रांतिकारी दल अपने प्रारंभ से ही स्पष्ट विचार वाला था। ये क्रांतिकारी प्रायः मध्य वर्गीय एवं प्रायः पढ़े–लिखे युवक थे। ये सशस्त्र क्रांति द्वारा ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना चाहते थे। इन्होंने स्कूलों, धार्मिक संस्थाओं, राजनीतिक अखाड़ों, सार्वजनिक सभाओं तथा पत्र–पत्रिकाओं में अपने विचारों का प्रचार किया। इस श्रृंखला की प्रथम कड़ी में युगांतर जिसका प्रकाशन और संपादन श्री अरविंद घोष के छोटे भाई श्री विरेन्द्र कुमार घोष ने किया और श्री भूपेन्द्र नाथ दत्त तथा श्री अविनाश भट्टाचार्य की सहायता से इसे प्रकाशित किया।[3]

राष्ट्रवादी प्रेस भारत मित्र ने बंग–भंग पर उग्र रूप धारण कर बंग विच्छेद शीर्षक से भारत मित्र ने लिखा था कि आपके शासन काल में बंग विच्छेद के लिए अंतिम विषाद और आपके लिए अंतिम हर्ष है। यह बंगविच्छेद बंग का विच्छेद नहीं। बंग निवासी इससे विच्छिन्न नहीं हुए, वरन् और युक्त हो गये। बंगाल के टुकड़े भी बंग देश से आकर सिमटे जाते है। भारतवासियों के मन में यह बात बैठ गई कि अंग्रेजों से भक्तिभाव करना व्यर्थ है, प्रार्थना करना व्यर्थ है। दुर्बल की वह नहीं सुनते। तत्कालीन राष्ट्रवादी प्रेस ने क्रांति की ज्वाला में अपने लेखों से आग में घी का कार्य किया। जिसके कारण क्रांतिकारियों की गतिविधियॉ प्रबल हो उठी।[4]

बंगाल के क्रांतिकारियों के बलिदान एवं भारतीयों के आत्मसम्मान को चोट पहुॅचाने के लिए अंग्रेजी समाचार–पत्रों ने लिखा था कि, यदि एक अंग्रेज की मृत्यु हो जाती है तब उसका प्रायश्चित दस हिन्दुस्तानियों को फॉसी देने से हो सकता है। सरकार के पास लाठी, जेल, गोली थी और क्रांतिकारियों के पास मूल्यवान प्राण–शक्ति थी। क्रांतिकारियों ने अपने प्राणदान से जन–साधारण को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।

क्रांतिकारियों पर यह आरोप लगाया जाता कि वे व्यक्तिगत आतंकवादी कार्यवाहियॉ करके देश को स्वतंत्र करना चाहते थे। उनका आम जनता से कोई संबंध नहीं था। अनुशीलन समिति और आगे चलकर देखे तो गदर पार्टी के कार्यों एवं सदस्य संख्या से यह आरोप निराधार सिद्ध हो जाता है। सरकार की कड़ी निगाह व आतंक के बाबजूद ये दोनों क्रांतिकारी, संगठन जनता की ओर उन्मुख थे। वास्तव में अनुशीलन समिति एक संगठित क्रांतिकारी दल था जो राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से निकला था। इसी ने कलकत्ता से संध्या, वंदेमातरम्, नवशक्ति और युगान्तर नामक साप्ताहिक पत्र निकाले। इन पत्रों ने क्रांतिकारी आंदोलन को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान अर्पित किया।[5]

काल, मराठा, केसरी, युगान्तर, वन्देमातरम्, संध्या आदि समाचार पत्रों के संपादकों पर मुकदमें चलाये गये तथा उन्हें जेलों में ठुँस दिया गया। कई समाचार पत्रों तथा उनके छापाखानों को जब्त कर लिया। माधुरी जैसी साहित्यिक पत्रिका भी स्वतंत्रता देवी के प्रति बलिदानी भावना को प्रदर्शित करती हुई बलिदान शीर्षक कविता में देशवासियों का आह्वान करती है कि ''

त्यों ही बल बांकुरे अखण्ड मही–मंडल के
जुझि है, प्रचण्ड रन–दुदुंभी रही है आज
बेरी की नबरे, बढ़ि वेगि चली दी जै तहॉ
बंधन विछोरि–छोरि लोक के अनेक काज
भीति ताजि भीच की स्नेह करू–खेत बीच
देश हित कीजै बंधु प्राण बलिदान आज।

इसी संदर्भ में देशभक्त क्रांतिकारी भावनाओं को उद्वेलित करते हुए लिखता है कि अत्याचारी लोग देश में दमनरत है। वे देश को जकड़ लिये हैं। ऐ बहादुरों उठो, ऑखे खोलो! घर में आग लगी है। विदेशी लूटपाट कर रहे हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रांतिकारी आन्दोलन की वाहक राष्ट्रवादी प्रेस थी। देश काल की राजनीतिक स्थिति के वर्णन के साथ ही भारतीय जन–समुदाय को देश के प्रति बलिदान होने के लिए आह्वान करते हुए तत्कालीन राष्ट्रवादी पत्र–पत्रिकाऐं निरंतर ब्रिटिश–साम्राज्यवाद पर प्रहार कर रही थी।

क्रांतिकारी आंदोलन के समय राष्ट्रवादी प्रेस का एक ही उद्देश्य था कि किसी भी प्रकार यह आंदोलन सफलता तक पहुँचे ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद से शीघ्र ही भारत को मुक्ति प्राप्त हो।

राष्ट्रवादी प्रेस की पूर्वोद्धत टीका–टिप्पणियों, लेखों और कविताओं ने भारत की जनता में क्रांतिकारी विचारों को आरोपित करने और उन्हें क्रांतिकारी आन्दोलन की ओर उन्मुख करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। असहयोग आन्दोलन और कांग्रेस में बिखराव के बाद देश के राजनीतिक क्षेत्र में जो शिथिलता आ गई थी, उसे राष्ट्रवादी प्रेस ने ही दूर किया। राष्ट्रवादी प्रेस के प्रभाव से क्रांतिकारियों के संगठन में शचीन्द्र नाथ सान्याल, शचीन्द्र नाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, योगेश चन्द्र चटर्जी आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रहीं। इनके प्रयास से बंगाल और उत्तर भारत के क्रांतिकारी परस्पर एकबद्ध हो गये।

लाला हरदयाल विदेश में रहकर गदर का प्रकाशन उर्दू में किया। वहीं उन्होंने हिन्दी दैनिक विशाल भारत के लिए भी क्रांतिकारी लेख लिखे। वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय ने तलवार पत्र का प्रकाशन किया। गुरूदत्त कुमार ने बेंकूवर में गुरूमुखी में स्वदेश सेवक क्रांतिकारी पत्रिका का प्रकाशन किया। उसी समय परदेशी खालसा का प्रकाशन भी गुरूमुखी भाषा में किया गया। गदर पत्र क्रांतिकारी पत्रकार लाला हरदयाल की संपादन में निकलने वाला यह पत्र लिखता है कि हर देशवासी का यह कर्त्तव्य है कि वह सैनिकों के विद्रोह में शामिल हो।[9]

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी परिपेक्ष्य में गदर–पत्र का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यह पत्र क्रांतिकारी विचारधारा के प्रचार में, भारत के बाहर सर्वाधिक क्रांतिकारी था। लाला हरदयाल ने जनवरी, 1914 के गदर में लिखा था कि हर व्यक्ति 1857 को याद करता है, हर देशवासी का कर्तव्य है कि वह सैनिकों के विद्रोह में शामिल हो।[10]

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में चॉद के फांसी अंक की टिप्पणी का यह अंश हमें राष्ट्रवादी पत्रकारिता के उस योगदान को प्रदर्शित करता है जिसे भारत के स्वतंत्रता इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित किया गया है। चॉद लिखता है कि :– ''प्यारी बहिनों, माताओं, भाईयों और बुजुर्गो। फांसी अंक को दिवाली की अमावस्या समझिए।

देखिये इसमें 20वीं शताब्दी के हुतात्मा के दीये कैसे टिमटिमा रहे हैं और देखिये स्थान–स्थान पर कैसी ज्वलंत अग्नि धांय–धांय जल रही है और सबके बीच में जागृत ज्योति–मृत्यु सुन्दरी कैसा श्रृंगार किये छमछामकर नाच रही है? पूजो! भाग्यहीन भारत के राजपाट अधिकार, सत्ता शक्तिहीन नर–नारियों, यहीं तुम्हारी गृह–लक्ष्मी है।[11]

निष्कर्ष

आपैनिवेशिक भारत में प्रेस ने क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन के साथ कंधो से कंधा मिलाकर सक्रिय भूमिका का परिचय दिया। राष्ट्रवादी प्रेस ने क्रांतिकारियों की गतिविधियों को अपने अग्रलेखों व सम्पादकीय टिप्पणियों के माध्यम से समर्थन प्रदान किया। जिससे क्रांतिकारी आंदोलनकारियों को सम्बल मिला। समय–समय पर प्रेस ने शासकीय दमन तथा अत्याचारों की घोर निंदा की तथा ब्रिटिश शासन के विरूद्ध कोई भी ऐसा अवसर नहीं जाने दिया, जब उसने अंग्रेजी राजशाही के विरूद्ध सशक्त जनमत जागृत करने का प्रयास न किया हो। यद्यपि प्रेस को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी तथापि राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने अपने मिशन से कभी समझौता नहीं किया। वास्तव में प्रेस ने ही समय–समय पर आंदोलनों में शिथिलता के कारण जो शून्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती थी, उसको सशक्त दिशा देकर एक नयी उर्जा और चेतना प्रदान किया।[12]

इस तरह हम देखते हैं कि औपनिवेशिक भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन में समाचार पत्रों व पत्रकारों की अहम् भूमिका रही। कई आर्थिक अभावों व संकटों को आत्मसात करते हुए पत्रकारों ने जनता को जागृत करने का कार्य किया तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा दिए गए कटोर दंडों की जरा भी परवाह नहीं की और दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में आजादी की अलाव जगाने में पूर्णतः सफल रहे। लाल चतुर्वेदी ने लिखा ''आजादी कितना मीठा शब्द है, पर यह शब्द अपने आप में मीठा नहीं, इसमें मिठास लाती है कुर्बानी, इसमें मिठास लाता है बलिदान पर यह बलिदान औरों का न हो। उनका हो जो आजादी चाहें'' उस समय पत्रकारिता एक मिशन के रूप में कार्य कर रही थी। काफी परेशानियों के रहते हुए भी ब्रिटिश सरकार का मुकाबला पत्रकारों ने किया समर्पण जैसा शब्द उसके शब्दकोष में नहीं था। हिन्दी समाचार–पत्रों को स्वतंत्रता आंदोलन से पृथक करके नहीं देखा जा सकता। इन समाचार पत्रों व उनके पत्रकारों का क्रांतिकारी आंदोलन में योगदान स्वर्ण अक्षरों में सदैव चमकता रहेगा। हमारी और आने वाली पीढ़ियॉ निश्चित रूप से इनकी ऋणी रहेगी।

संदर्भ सूची

1. लाल, वंशीधरः हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास, अनुपम प्रकाशन, पटना, 1992, पृ0–25
2. ताराचंद : भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, भाग–2 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1965, पृ0–36
3. वर्मा, एम0एल0ः स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी साहित्य का इतिहास, भाग–2, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ0–570
4. गुप्त, मन्मथनाथः भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, सौम्या प्रकाशन, बम्बई, 1972 पृ0–329
5. वही, पृ0–365
6. लाल, सर सुन्दरः भारत में अंग्रेजी राज भाग–2, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2016, पृ0–965
7. मिश्र भवानी प्रसादः हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम, नई दिल्ली, 1992, पृ0–375
8. व्यास, लक्ष्मीशंकर, पत्रकारिता के युग निर्माता, व्यास प्रकाशन, वाराणसी, 1988, पृ0–8
9. नंदा, बी0आरः महात्मा गॉधी : एक जीवनी, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 1995, पृ0–252
10. वैदिक, वेद प्रताप, हिन्दि पत्रकारिता : विविध आयाम, कमला प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृ0–173
11. शर्मा, रामविलासः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याऍ, राजकमल प्रकाशन, 2012, पृ0–118–19
12. योजना, अक्टूबर, 2003 प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ0–9